International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(4): 07-09

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(4): 07-09
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 08-05-2019
Accepted: 12-06-2019

डॉ. बुद्ध देव राम
संस्कृत विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, भोजपुर बिहार, भारत।

Correspondence
डॉ. बुद्ध देव राम
संस्कृत विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, भोजपुर बिहार, भारत।

पुराणोत्पत्तिविमर्श

डॉ. बुद्ध देव राम

प्रस्तावना

संस्कृत वाघ्मय में पुराणों का महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। धर्म दर्शन के अतिरिक्त अन्य अनेक दिव्य ज्ञान के अक्षय कोष के रूप में पुराणों की प्रसिद्धि सर्वमान्य रही है। ये अनुपम ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक ग्रंथ है। ये भारत के ऐसी आधारपीठ रहे हैं, जिनपर आधारित होकर ही वर्तमान भारतीय समाज अपने नियमन को प्रतिष्ठत करता आ रहा है।

पुराण की उत्पत्ति के विषय में पुराणों में प्रायः एक समान मत पाये जाते हैं। ब्राह्मा के मुख से उसके उदय के विषय में तो किसी प्रकार की विप्रतिपत्ति नहीं है। विभिन्नता का कारण है कि यह निर्धारण कि यह उत्पत्ति वेद की उत्पत्ति से प्राक्कालीन है या पाश्चात्कालीन। मत्स्यपुराण के अनुसार सब शास्त्रों में ''पुराण'' की ही रचना ब्रह्मदेव ने सबसे पहले की और इसके बाद उनके मुख से सब वेद विनिर्गत हुए–

पुराणं सर्वशास्त्राणां प्रथमं ब्रह्मणा कृतम्।
अनन्तरं च वक्त्रोभ्यो वेदास्तस्य विनिर्गता।।[1]

वेद के प्राक्कालीन निर्माण की यह सिद्धान्त मत्स्य की अपनी विशिष्ट कल्पना है। श्रीमद्भागवत पुराण की उत्पत्ति वेद पाश्चात्कालीन मानता है, परन्तु एक अन्तर के साथ। ट्टग्वेदादि का उदय तो ब्रह्मा के पूर्व मुख से आरम्भ कर क्रमशः हुआ, परन्तु पुराण की उत्पत्ति चारों मुखों से एक काल में सम्पन्न हुई। भागवत का कथन पुराण का वेद से आधिक्त सिद्ध करता है, परन्तु उत्पत्ति पाश्चातकालीन ही मानता है –

ट्टक्यजुः सामार्थवाख्यान् वेदान् पूर्वादिमिर्मुखैः।
शास्त्रभिज्यां स्तुतिस्तोमं प्रायश्चितं व्याधतु क्रमात।।
इतिहासपुराणानि प. चं वेदमीश्वरः।
सर्वेभ्य एव वक्त्रोभ्यः ससृजे सर्वदर्शनः।।[2]

पुराण का उदय यह ''विद्या'' के रूप में समझना चाहिए। यह अव्यवस्थित रूप से था और इसका प्रवचन किसी ग्रन्थ से नहीं किया जाता था, अपितु मौखिक रूप से ही।

पुराण के विकास में एक नवीन युग का आरम्भ होता है जब व्यास जी ने 'पुराण–संहिता' का प्रणय कर पुराण को सुव्यवस्थित रूप में प्रतिष्ठित किया। पुराण विषयक अव्यवस्था का अवसान 'पुराणसंहिता' के निर्माण से निश्चित रूप से हो गया। मौलिक रूप से विचरणशील शास्त्र अब लोगों की जिह्वा से नीचे उतरकर वर्णमय विग्रह में अपने को पाकर एक साथ उल्लासित तथा प्रफुल्लित हो उठा। इसी काल का परिचय दिया जाता है।

व्यास ने ही पुराण–संहिता का स्वयं प्रणयन कर लोमहर्षण सूत को उसे पढ़ाया और उसके प्रचार का साधन उन्हीं को बनाया। पुराणों के रचयिता के सम्बन्ध में संक्षेपतः यही कहा जाना समीचीन है कि ब्रह्मा के मुख से निःसरित वाक्यों का महात्मा वेद व्यास ने संकलन किया–

पुराणां सर्वशास्त्राणां प्रथमं ब्रह्मणास्मृतम्।[3]

वस्तुतः वर्तमान वाराह कल्प में अट्ठाईस बार वेदों और पुराणों का संकलन हो चुका है। अन्तिम बार महर्षि पराशर के पुत्र श्रीकृष्णद्वैयापन ने आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व पुराणों का संकलन किया। प्रायः सभी पुराणों के संकलन का वर्णन प्राप्त होता है।

आदिम महापुराण विषय विभाग के अनुसार समस्त मौलिक विषय–सामग्री को अट्ठारह भागों में विभक्त करके लेखब करना वेद व्यास जी का ही कार्य सिद्ध है। पुराणों में वर्णन मिलता है कि–

कालेन ग्रहणं दृष्टवा पुराणस्यततोनृप।
व्यासरूपमहं कृत्वा संहराभि युगे युगे।।
चतुर्लक्षप्रमाणेन द्वापरे–द्वापरे सदा।
तथाष्टादशध कृत्वा भूलोकेऽस्मिन प्रकाश्यते।।[4]

श्रीमत् कृष्णद्वैपायन द्वारा संकलित अट्ठारह महापुराणों में श्री नारद महापुराण का भी स्थान आता है। इसमें 25000 (पच्चीस हजार) श्लोक समाहित है। यह पुराण अनेक विषयों से परिपूर्ण एवं अति महत्वपूर्ण है अर्थात् अन्य पुराणों की भाँति नारद महापुराण के भी रचयिता ब्रह्म एवं सम्पादक या संकलनकर्ता श्रीकृष्ण द्वैपायन महात्मा वेद व्यास ही हैं।
ऐसा भी प्रमाण मिलता है कि नारद पुराणादि के संकलनकर्ता केवल वेद व्यास ही नहीं है, वरन् अनेक ट्टषि–मुनियों का सहयोग इस कार्य में रहा है। आचार्य मनु ने श्रद्धा के समय इतिहास एवं पुराणों को पढ़कर सुनाने की व्यवस्था बतलायी है–

स्वाध्यायं श्रावयेत्पित्रये र्धमशास्त्राणि चैव हि।
आख्यानानि इतिहासाश्च पुराणानि खिलानिच।।[5]

इस श्लोक की व्याख्या क्रम में मेघातिथि ने टिप्पणी करते हुए लिखा है–

पुराणानि व्यासादि प्रणीतानि नतु व्यास प्रणीतानि।[6]

मार्कण्डेय पुराण में कहा गया है कि–

पुराणमेतद् वेदाश्च मुखेभ्योऽने विनिः सृताः।
पुराण संहिताश्चक्रुः वहुलाः परमर्षय+
वेदनां प्रविभागश्च कृतस्तैस्तु सहस्त्राः।।[7]

इस श्लोक में 'बहुलाः परमर्षयः' शब्द विशेष विचारणीय है। वेद और पुराण ब्रह्म के मुख से निःसारित तथा बहुत से परम ट्टषियों द्वारा पुराण ग्रन्थ के रूप में प्रणीत किये गए संकलन के कारण ही पुराण ग्रन्थ प्रथमतः ''पुराण संहिता नाम से अभिहित किए गए और यही सिद्धान्त नारद पुराण के प्रसंग में भी कहा जाना समुचित होगा। कुर्म पुराण में कहा गया है–

अष्टादश पुराणानि व्यासाद्यैः कथितानि तु।
नियोगाद ब्रह्मणो राजन तेषु धर्मः प्रतिष्ठितः।।[8]

यहाँ ''व्यासाद्यै'' कहने से व्यासजी के साथ अन्यों का भी बोध होता है। तथास्तु इस कार्य में मूल प्रेरणा वेद व्यास की ही है। उन्हीं को 'पुराण संहिता' के ही ये अष्टादश पुराणा विस्तृत संस्करण है– इस सिद्धान्त को नाम लेने में कोई भी ऐतिहासिक विप्रतिपति नहीं है। तात्पर्य के ऐक्य एवं प्रेरणा के ऐक्य के कारण वेद व्यास को ही सभी पुराणों (नारद पुराण सहित) के प्रणेता या संकलनकर्ता मानने में किसी भी प्रकार का दोष उपस्थित नहीं होता।
पौराणिक साहित्य सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक द्वापर के अन्त में और कलयुग के आरम्भ में व्यासदेव प्रकट् होकर युग धर्म से अव्यवस्थित एवं कालक्रम में विश्रृंखल शास्त्रों का क्रमबद्ध समीचीन संकलन करते हैं–

कालेनाग्रहणं दृष्टवा पुराणास्य ततो नृप।
व्यास रूपं विभुंकृत्वा संहरेत स युगे–युगे।।
चतुर्लक्ष प्रमाणेन द्वापरे–द्वापरे सदा।
तदष्टादशध कृत्वा भूलोकेऽस्मिन प्रभाषते।।[9]

पं. श्री कालूराम शास्त्री ने लिखा है कि ''प्रत्येक द्वापर में नवीन व्यास हुआ करते हैं। व्यास किसी का नाम नहीं वरन पदवी है। वस्तुतः वेदवृत से जो सीधा निकल जाये उसका नाम वेद व्यास है। जितने भी व्यास हुए हैं वे सभी वेद और पुराण तत्त्व के पूर्ण ज्ञाता हुए है।10 शिव पुराण में भी सभी पुराणों के वक्ता सत्वतीनन्दन श्री व्यास जी को माना गया है–

अष्टादश पुराणानां वक्ता सव्यवतीसुतः।[11]

श्रीमद्भागवत् में भी चर्चा आयी है कि श्री कृष्ण द्वैपायन व्यास के द्वारा ही पुराण संकलित किये गये है। पं. ज्वाला प्रसाद मिश्र ने कहा है कि– ''ब्रह्म द्वारा कही हुई और व्यास द्वारा संक्षिप्त की हुई उस आदि संहिता से पुराण संहिता संकलित है।[12]
वस्तुतः पुराण आदिकाल की कृति है जिसके सर्वप्रथम प्रकाशक श्री ब्रह्मा जी है। ब्रह्मा जी ने मुनियों को सुनाया और प्रत्येक कल्प में देवता, ट्टषि, मुनि आदि ने अलग–अलग उनकी संहिता का निर्माण किया। अपने–अपने समय में व्यास जी ने उन्हें ट्टषि–मुनियों की कृतियों एवं वाक्यों को संक्षेप में सम्पादित कर देवता–ट्टषि मुनि आदि के मतों–विचारों को यथावत रखकर, यत्रा–तत्रा आवश्यकता अनुसार प्रसंग आदि की पूर्ति या स्पष्टीकरण के लिए अपने वचनों सहित पुराण रचना करते हैं।
वर्तमान अष्टादश पुराण श्री–कृष्ण द्वैपायन व्यास जी से भी पूर्व की मूलतः रचना है। महर्षि व्यास ने तो पुराण का, पुरातन सामग्री का सम्पादन, अट्ठारह पुराणों के विभागों में विभाजित कर अनुज आगतों के लिए साहित्यकारक अनुपम भण्डार प्रदान कर दिया।
नारद पुराण भी अष्टादश पुराणों के अन्तर्गत आता है। इससे स्पष्ट है कि इसके सम्पादक श्रीकृष्णद्वैपायन व्यास ही हैं।
अन्य पक्षधरें का कहना है कि नारद पुराण स्वयं महर्षि नारद द्वारा उक्त एवं वर्णित है–

नारदोक्तं पुराणं तु नारदीयं प्रचक्षते।[13]

मत्स्य पुराण में भी कहा गया है कि श्री नारद जी ने वृहत्कल्प प्रसंग में जिन अनेक धर्म अख्यिायिकाओं को कहा है, वही 25000 श्लोक युक्त संकलन नारद महापुराण है–

यत्राह नारदो र्धमान् वृहत्कल्पाश्रयणि च।
प. चविशं सहड्राणि नारदीयं तदुच्यते।।[14]

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि नारद पुराण के संकलन में महर्षि नारद का अत्यधिक सहयोग रहा है, जिसके चलते इस पुराण का नामकरण 'नारद पुराण' हो गया और लोगों ने मानना प्रारम्भ कर दिया हो कि इस पुराण के रचयिता स्वयं महर्षि नारद ही रहे हैं।
पुराणों के राजवंश–वर्णनों में 600 ई. के पूर्व तक के राजाओं का ही निरूपण हुआ है। अतएव कुछ विद्वानों का मत है कि पुराण 500 ई. में अवश्य ही अपने वर्तमान रूप में आ गये थे। फिर भी इस विषय में पर्याप्त मतभेद हैं। इसी ओर प्राचीन धर्मसूत्रों तथा महाभारत में पुराणों का उल्लेख है जिसमें पुराणों की रचनाकार का आरम्भ प्रायः 600 ई.पू. माना जा सकता है। इन 1100 वर्षों के अन्तराल में पौराणिक साहित्य का शनैः–शनै विकास होता रहा है।
बाल गर्धैधर तिलक ने पुराणों की रचना का समापन–काल दूसरी शताब्दी ई. माना है। पुराणों में राजनीतिक इतिहास का अध्ययन करने वाले पार्सिटर ने कहा है कि पुराण अपने मूल रूप में प्रथम शताब्दी ई. में ही आ रहा था। आधुनिक भारतीय विद्वानों ने पुराणों के रचना–काल के विषय में पर्याप्त अनुसन्धान किया है जिससे डॉ. टार. सी. हजारा का योगदान बहुमूल्य है। उन्होंने प्राचीनता महापुराणों में मार्कण्डेय, ब्रह्मण्ड, विष्णु, मत्स्य, भागवत तथा कूर्म को रखा है। विष्णु पुराण की रचना उन्होंने तृतीय–चतुर्थ शताब्दी ई॰ में

मानी है किन्तु ब्राह्माण्ड तथा मार्कण्डेय पुराण उससे पूर्व निर्मित हो चुके थे। वायु पुराण प्रायः 500 ई॰ में भागवत पुराण 600 ई॰ में तथा कूर्म पुराण 700 ई॰ में लिखा गया। पी. वी. काणे अग्नि पुराण को 700 ई. माने है। बाणभट्ट ने 600 से 650 ई. के बीच अपने गाँव में वायुपुराण के वाचन का उल्लेख किया है।

संदर्भ सूची –

1. मत्स्य पुराण अध्याय 53, श्लोक सं. 3
2. भागवत पुराण 3/12/37, 39
3. मत्स्य पुराण 3/3
4. मत्स्य पुराण 53/8/40
5. पुराण विमर्श – आचार्य बालदेव उपाध्याय, पृ. 399
6. पुराण विमर्श – आचार्य बालदेव उपाध्याय, पृ. 399
7. पुराण विमर्श – आचार्य बालदेव उपाध्याय, पृ. 399
8. कूर्म पुराण, पूर्वार्ध, अध्याय 12, श्लोक 268
9. शिव पुराण, रेवा खण्ड
10. पुराणवर्म प्र. संस्करण, पृ. 134
11. शिवपुराण रेवा खण्ड
12. अष्टादश पुराण दर्पण उपोद्घात, ज्वाला प्रसाद मिश्र
13. शिव उपपुराण
14. मत्स्य पुराण, अ. 53, श्लोक सं. 23